GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

"वाणी भूषण के आधार पर संस्कृत और गुण पिंगल प्रकाश के आधार पर चारणी भाषा के वर्णवृत्त का तुलनात्मक अध्ययन"

डॉ. आनंद महेशभाई गढ़वी

शोधसार

प्रस्तुत शोधपत्र में संस्कृत छन्दशास्त्र की परम्परा में वर्णवृत्तों के स्वरूप, लक्षण एवं प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। विशेषतः संस्कृत छंदों में निबध्द दामोदरजी मिश्र कृत वाणीभूषण तथा हमीरजी रत्नू कृत चारणी छंदों में निबध्द गुण पिङ्गल प्रकाश–इन दो प्रमुख ग्रन्थों के आधार पर श्री, काम, मधु, मही एवं सारू नामक वर्णवृत्तों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि वाणीभूषण में वर्णवृत्तों का निरूपण मुख्यतः गुरु-लघु वर्णों की व्यवस्था के आधार पर किया गया है, जबकि गुण पिङ्गल प्रकाश में उन्हीं वृत्तों की व्याख्या पिङ्गल परम्परा के अनुसार मात्रात्मक एवं व्यावहारिक उदाहरणों सहित की गई है। दोनों ग्रन्थों में समान छन्दनाम होते हुए भी लक्षण-प्रस्तुति, चरण-संरचना तथा उदाहरणों में सूक्ष्म भिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

शोध के निष्कर्षस्वरूप यह प्रतिपादित होता है कि वाणीभूषण शास्त्रीय संक्षिप्तता एवं सूत्रात्मकता पर बल देता है, जबकि गुण पिङ्गल प्रकाश व्याख्यात्मक, उदाहरणप्रधान एवं अभ्यासोन्मुख ग्रन्थ है। दोनों ग्रन्थ एक-दूसरे के पूरक सिद्ध होते हैं और वर्णवृत्तों की सम्यक्

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

समझ के लिए इनका संयुक्त अध्ययन अनिवार्य है। यह शोध छन्दशास्त्र के विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के लिए वर्णवृत्त परम्परा को गहराई से समझने में सहायक सिद्ध होता है।

मुख्य शब्द:- छन्दशास्त्र, वर्णवृत्त, वाणीभूषण, गण पिङ्गल प्रकाश, दामोदरजी मिश्र, हमीरजी रत्नू, गुरु-लघु वर्ण,श्री छन्द, काम छन्द, मधु छन्द, मही छन्द, सारू छन्द, पिङ्गल परम्परा, तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना:-

भारतीय संस्कृत साहित्य की काव्यपरम्परा में छन्दशास्त्र का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं आधारभूत रहा है। वेदों से लेकर उत्तरकालीन काव्य, नाटक तथा स्तोत्र साहित्य तक छन्दों की सुसंयोजित रचना ने काव्य को न केवल सौन्दर्य प्रदान किया है, अपितु उसे स्मरणीय, लयात्मक और प्रभावशाली भी बनाया है। छन्दशास्त्र का मुख्य उद्देश्य काव्य में वर्णों एवं मात्राओं की सुव्यवस्थित योजना द्वारा लय और संगीतात्मकता की सृष्टि करना है। इसी परम्परा में वर्णवृत्त और मात्रावृत्त का विकास हुआ, जिनमें वर्णवृत्त संस्कृत काव्यरचना की प्राचीन एवं मूलभूत प्रणाली मानी जाती है।

वर्णवृत्तों की परम्परा में आचार्य पिङ्गल से लेकर मध्यकालीन आचार्यों तक अनेक विद्वानों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इस क्रम में दामोदरजी मिश्र कृत वाणीभूषण तथा हमीरजी रत्नू कृत गुण पिङ्गल प्रकाश छन्दशास्त्रीय साहित्य के अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रन्थ माने जाते हैं। वाणीभूषण में छन्दों का लक्षण सूत्रात्मक एवं शास्त्रीय शैली में प्रस्तुत किया गया है, जबकि गण पिङ्गल प्रकाश में उन्हीं छन्दों की व्याख्या पिङ्गल परम्परा के अनुसार उदाहरणों एवं अभ्यासात्मक दृष्टि से की गई है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य छन्दशास्त्र के संदर्भ में इन दोनों ग्रन्थों में वर्णित श्री, काम, मधु, मही एवं सारू नामक वर्णवृत्तों का तुलनात्मक अध्ययन करना है। इसके माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि विभिन्न आचार्यों द्वारा समान छन्दों की व्याख्या में किस प्रकार साम्य एवं वैषम्य पाया जाता है तथा गुरु-लघु वर्णों की संरचना में कौन-कौन से सूक्ष्म भेद दृष्टिगत होते हैं। यह अध्ययन न केवल छन्दशास्त्र की परम्परा को समझने में सहायक है, बल्कि संस्कृत काव्य की रचनात्मक प्रक्रिया में वर्णवृत्तों की भूमिका को भी उजागर करता है।

(१) वर्णवृत्त : श्री

द्वितीय परिच्छेद में दामोदरजी ने श्री वृत्त का लक्षण कुछ इस प्रकार दिया है ।

यद् गौः सा श्रीः ।[1]

अर्थात् प्रत्येक चरण में दो गुरु रखके दो चरण का श्री नामक छन्द बनता है ।

श्री वर्णवृत्त का उदाहरण ग्रन्थानुसार देखते है ।

विष्णुम् ।

वन्दे ।।[2]

इस उदाहरण में 'वि' वर्ण को 'ष्' का प्रबलन एवम् 'णु' वर्ण का 'म' का प्रबलन

[1] मिश्र दामोदर, "वाणी भूषण" द्वितीय परिच्छेद श्लोक क्रमांक:-०१, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:-MN 000667.

[2] मिश्र दामोदर, "वाणी भूषण" द्वितीय परिच्छेद श्लोक क्रमांक:-०२, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:-MN 000667.

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

लगने से यहाँ प्रथम चरण में दो गुरू वर्ण हुए है । द्वितीय चरण में 'व' वर्ण को 'न' क प्रबलन लगने से गुरू हुआ है । 'दे' वर्ण स्वयंभू गुरू है। इस तरह लक्षणानुसार उदाहरण हमें प्राप्त हुआ है । गङ्गादासजी ने 'श्री' छन्द का निम्नोक्त उदाहरण दिया है ।

श्री स्ते । सास्ताम् ।।[3]

उपरोक्त उदाहरण में दोनों चरण में दो-दो गुरू वर्णों का प्रयोग हमीरजी रत्नू ने अपने ग्रन्थ 'गुण पिङ्गल प्रकाश' में विविध मात्रावृत्तों की सविशद् चर्चा कि है । 'वाणीभूषण' से तुल्यमान छन्दों को चयनित करके हमने अभ्यास किया । अब 'गुण पिङ्गल प्रकाश' के वर्णवृत्तों का 'वाणीभूषण' के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन करेंगे ।

(१) वर्णवृत्त : श्री

'वाणीभूषण' में दामोदरजी मिश्र 'श्री' वृत्त का लक्षण देते हुए कहते है कि, प्रत्येक वर्ण रखने ' श्री' वर्णवृत्त बनता है ।

हमीरजी ने वर्णवृत्तों की व्याख्या दी है अतः ग्रन्थानुसार 'श्री' वृत्त की व्याख्या देखते है,

एक जास पाये अखर, गुरू आवैं सिणगार ।
आखि छंद श्री आदि रौ, पुजि सीता भरतार । ।[4]

उपरोक्त व्याख्यानुसार प्रत्येक चरण में एक गुरू मात्रा रखके 'श्री' नामक आद्य- वर्णवृत्त बनाएँ । 'गण पिङ्गल प्रकाश' के अनुसार इसका उदाहरण देखते है ।

---

[3] गंगादास "छंदो मंजरी" षष्ठ स्तबक, श्लोक क्रमांक:- ३१, संपादक:- जीवानंद विद्यासागर भट्टाचार्य, प्रकाशक:- पण्डित श्री आशुबोध विद्यारत्न च पण्डित श्री नीतिबोध विद्यारत्न, १८१५

[4] रत्नु, हमीरजी, "गुण पिंगल प्रकाश" राजकवि ठारणबापू महेडु हस्तप्रत भण्डार(निजी संग्रह), अध्याय २, छंद २.

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

राः मं : ना : मं ।।[5]

(२) वर्णवृत्त : काम

दामोदरजी ने 'काम' नामक वार्णिक छन्द का लक्षण कुछ इस प्रकार दिया है ।

यस्मिनहारौः काम स स्यात् ।।[6]

अर्थात् दो गुरू वर्ण की हारमाला युक्त चार गुरू एक चरण में रख के, दो चरण का काम नामक वर्णवृत्त का प्रयोजन कीजिए ।लक्षण के अनुसन्धान में ग्रन्थ अनुसार काम छन्द का उदाहरण देखते है।

कल्याणं वाः ।

शंभुर्देयात् ।।[7]

प्रस्तुत उदाहरण में संयुक्ताक्षर से प्रथम एवं द्वितीय चरणों में परस्पर प्रबलन के कारण चार गुरू वर्ण का निर्माण होता है । इस तरह दोनों चरणों के मिलकर ८ गुरू हुए इस विधि से काम नामक वार्णिक छन्द का गठन होता है ।

---

[5] रत्नु, हमीरजी, "गुण पिंगल प्रकाश" राजकवि ठारणबापू महेडु हस्तप्रत भण्डार(निजी संग्रह), अध्याय २, छंद ३.

[6] मिश्र दामोदर, "वाणी भूषण" द्वितीय परिच्छेद श्लोक क्रमांक:-०३, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- MN 000667.

[7] मिश्र दामोदर, "वाणी भूषण" द्वितीय परिच्छेद श्लोक क्रमांक:-०४, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- MN 000667.

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

(२) वर्णवृत्त : काम

'वाणीभूषण' की व्याख्यानुसार दो गुरू वर्ण प्रत्येक चरण में रखकर 'काम' वर्णवृत्त निर्मित होता है।

'गुण पिङ्गल प्रकाश' के अनुसार वर्णवृत्त 'काम' की व्याख्या देखते है ।

पाये एकणि दो मां प्रभणि, होइ होइ जिणि हार ।

सेस नाम संभलाविऊ, काम छन्द पडिकार ।।[8]

इस व्याख्यानुसार प्रत्येक चरण में दो गुरू रखने है । अब ग्रन्थानुसार 'काम' वर्णवृत्त

का उदाहरण देखते है ।

सांई : साचो ।

वाणी : वाचो ।।[9]

प्रस्तुत उदाहरण के चारों चरण में दो गुरू वर्ण विद्यमान है । इसका स्पष्ट रूप से समजते है ।

(३) वर्णवृत्त : मधु

'मधु' नामक, वर्णवृत्त का लक्षण दामोदरजी ने निम्नलिखित प्रकार से दिया है ।

द्विक लघु ।

मधुरिति ।।[10]

अर्थात् दो लघु वर्गों की जोड़ से युक्त दो चरण मधु नामक वार्णिक छन्द का गठन

[8] रत्नु, हमीरजी, "गुण पिंगल प्रकाश" राजकवि ठारणबापू महेडु हस्तप्रत भण्डार(निजी संग्रह), अध्याय २, छंद ४.

[9] रत्नु, हमीरजी, "गुण पिंगल प्रकाश" राजकवि ठारणबापू महेडु हस्तप्रत भण्डार(निजी संग्रह), अध्याय २, छंद ५.

[10] "वाणी भूषण"

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

करते है । इस तरह से प्रथम चरण में चार लघु वर्ण एवं द्वितीय चरण में अन्य चार लघु वर्ण मिलकर आठ लघु वर्ण एक मधु छन्द बनाता है । लक्षणानुसार उदाहरण ग्रन्थानुसार निम्न प्रकार से देखते है ।

रति मय ।

वर तनु ।।[11]

उक्त उदाहरण लक्षणानुसार चार लघुयुक्त है ।

(३) वर्णवृत्त : मधु

'वाणीभूषण' के अनुसार प्रत्येक चरण में दो लघु वर्ण रखकर 'मधु' वर्णवृत्त बनता है । "गुण पिङ्गल प्रकाश' के अनुसार 'मधु' वर्णवृत्त की व्याख्या देखते है ।

वरण दोइ ते लघु संचरे, सुजि मधु छंद सरूप ।

कर जोड़ें करूणा करण, पुजि राधावर भूप । ।[12]

प्रस्तुत व्याख्यानुसार हमीरजी हमें प्रत्येक चरण में दो लघु वर्ण रखने की बात करते है । 'मधु' वृत्त का ग्रन्थानुसार उदाहरण देखते है ।

हरिः हरि ।

तविः तरि ।।[13]

---

[11] मिश्र दामोदर, "वाणी भूषण" द्वितीय परिच्छेद श्लोक क्रमांक:-०६, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- MN 000667.

[12] रत्नु, हमीरजी, "गुण पिंगल प्रकाश" राजकवि ठारणबापू महेडु हस्तप्रत भण्डार(निजी संग्रह), अध्याय २, छंद ६.

[13] रत्नु, हमीरजी, "गुण पिंगल प्रकाश" राजकवि ठारणबापू महेडु हस्तप्रत भण्डार(निजी संग्रह), अध्याय २, छंद ७.

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

प्रस्तुत उदाहरण में चार चरण है प्रत्येक चरण में दो लघु विद्यमान है । इसे स्पष्ट रूप से समजते है ।

(४) वर्णवृत्त : मही

'मही' नामक वर्णवृत्त का लक्षण दामोदरजी ने निम्नलिखित प्रकार से दिया है ।

लघुश्च गुः ।

मही स्मृता ।।[14]

अर्थात् एक वर्ण लघु एवं दूसरा वर्ण गुरू रख के मही छन्द निर्माण कीजिए । इसमें लघु-गुरू की दो जोड़ रख के एक चरण बनता है । ऐसे ही दो चरण रखके हम छन्द निर्माण कर सकते है । अब हम मही छन्द का ग्रन्थानुसार उदाहरण देखते है ।

हरोस्तु मे ।

मनो मुदे ।।[15]

इस लक्षण में लघु-गुरू का लक्षणानुसार प्रयोजन किया गया है । प्रथम चरण में चार वर्ण जिस में लघु + गुरू + लघु + गुरू आता है । उसी प्रकार से दूसरों चरण में वर्णव्यवस्था कि गई है । अतः मही नामक वर्णवृत्त उपरोक्त प्रकार से निबद्ध होता है ।

---

[14] मिश्र दामोदर, "वाणी भूषण" द्वितीय परिच्छेद श्लोक क्रमांक:-०७, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- MN 000667.

[15] मिश्र दामोदर, "वाणी भूषण" द्वितीय परिच्छेद श्लोक क्रमांक:-०८, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- MN 000667.

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

(४) वर्णवृत्त : मही

'वाणीभूषण' की व्याख्यानुसार 'मही' छन्द के प्रत्येक चरण में एक लघु वर्ण फिर एक गुरू वर्ण रखकर चरण निर्मित होता है । गुण पिङ्गल प्रकाश' के अनुसार 'मही' वर्णवृत्त की व्याख्या देखते है ।

एकणि पाये आणिजे, एक लघु गुरू एक ।

पिंगल नाग परीछवै, मही सुछंदव मेक ।।[16]

उक्त व्याख्यानुसार प्रत्येक चरण में एक लघु एवं एक गुरू वर्ण रखकर पिङ्गल नाग मतान्त 'मही' वर्णवृत्त निर्मित करना है । ' गुण पिङ्गल प्रकाश' के अनुसार 'मही' वर्णवृत्त का उदाहरण देखते है

गिरं ग्रहे ।

कथा कहे ।।[17]

उक्त उदाहरण में प्रत्येक चरण में पहले लघु वर्ण अनन्तर गुरू वर्ण विद्यमान है ।

(५) वर्णवृत्त : सारू

'सारू' नामक वर्णवृत्त का लक्षण दामोदरजी ने निम्नलिखित प्रकार से है -

हारलश्च ।

धारि सारू ।।[18] इस लक्षणानुसार गुरू + लघु की हारमाला निर्मित होती है । दो चरण में इस छन्द का निर्माण होता है ।

---

[16] रत्नु, हमीरजी, "गुण पिंगल प्रकाश" राजकवि ठारणबापू महेडु हस्तप्रत भण्डार(निजी संग्रह), अध्याय २, छंद ८.

[17] रत्नु, हमीरजी, "गुण पिंगल प्रकाश" राजकवि ठारणबापू महेडु हस्तप्रत भण्डार(निजी संग्रह), अध्याय २, छंद ९.

[18] मिश्र दामोदर, "वाणी भूषण" द्वितीय परिच्छेद श्लोक

क्रमांक:-०९, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:-

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

'सारू' 'नामक इस वर्णवृत्त का ग्रन्थानुसार उदाहरण देखते है ।

कृत्यवस्तु ।

सिद्धमस्तु ।।[19]

इस उदाहरण में प्रथम चरण में गुरू + लघु + गुरू+लघु वर्णों का प्रयोग है । दूसरे चरण में इसी प्रकार से है । प्रथम चरण में 'व' वर्ण को संयुक्ताक्षर 'स' वर्ण का प्रबलन लगा है सो गुरू बन गया है । दूसरे चरण में 'सि' वर्ण को 'द्ध' का प्रबलन लगने गुरू बन गया है । प्रथम चरण के 'वस्तु' एवं द्वितीय चरण के 'मस्तु' में 'व' एवं 'म' वर्ण को पीछले वर्णों का प्रबलन गुरू बनाता है । इस प्रकार लक्षणानुसार सारू छन्द का उदाहरण हमें प्राप्त हुआ है ।

(५) वर्णवृत्त : सारु

'वाणीभूषण' के अनुसार 'सार' वर्णवृत्त में प्रत्येक चरण में प्रथम वर्ण गुरू एवं द्वितीय वर्ण लघु होता है । ' गुण पिङ्गल प्रकाश' के अनुसार 'सारु" वर्णवृत्त की व्याख्या देखते है । पहिलो दीरध लुध पछै, पाये एह प्रकार ।

त्रिणि मात्रा आवै तिक, सारू छंद ततसार ।।[20]

उक्त व्याख्यानुसार प्रथम वर्ण प्रत्येक चरण में गुरू एवं दूसरा लघु रखके चरण बनाएँ । इस तरह गुरू (२ मात्रा) एवं लघु (१ मात्रा) का योग प्रत्येक चरण में ३ मात्रायुक्त

MN 000667.

[19] मिश्र दामोदर, "वाणी भूषण" द्वितीय परिच्छेद श्लोक क्रमांक:-१०, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय हस्तप्रत क्रमांक:- MN 000667.

[20] रत्नु, हमीरजी, "गुण पिंगल प्रकाश" राजकवि ठारणबापू महेडु हस्तप्रत भण्डार(निजी संग्रह), अध्याय २, छंद १०.

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

'सारु' वृत्त बनता है । 'गण पिङ्गल प्रकाश' के आधार पर 'सार' वृत्त का ग्रन्थोक्त उदाहरण देखते है ।

देव : देव ।

साहि : सेव ।।[21]

उपरोक्त उदाहरण में गुरू+लघु का लक्षणानुसार नियम का पालन हुआ है । मात्राएँ भी प्रत्येक चरण की ३ है ।

उपसंहार

प्रस्तुत शोधपत्र में छन्दशास्त्र की परम्परा के अन्तर्गत वर्णवृत्तों के स्वरूप, लक्षण एवं प्रयोग का सम्यक् अध्ययन किया गया है। विशेष रूप से दामोदरजी मिश्र कृत *वाणीभूषण* तथा हमीरजी रत्नू कृत गुण *पिङ्गल प्रकाश*–इन दोनों प्रमुख छन्दशास्त्रीय ग्रन्थों के आलोक में **श्री, काम, मधु, मही एवं सारू** नामक वर्णवृत्तों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि दोनों आचार्यों की छन्द-दृष्टि समान परम्परा में स्थित होते हुए भी प्रस्तुति की शैली, व्याख्या-पद्धति तथा उदाहरण-प्रयोग में भिन्न है।

वाणीभूषण में वर्णवृत्तों का निरूपण संक्षिप्त, सूत्रात्मक एवं शास्त्रीय ढंग से किया गया है, जिससे छन्दों के मूल लक्षण सहज रूप में स्पष्ट होते हैं। इसके विपरीत *गण पिङ्गल प्रकाश* में उन्हीं वर्णवृत्तों को पिङ्गल परम्परा के अनुसार विस्तारपूर्वक, मात्रात्मक विवेचन एवं व्यवहारिक उदाहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इस कारण *गण पिङ्गल प्रकाश* अध्ययन एवं

[21] रत्नु, हमीरजी, "गुण पिंगल प्रकाश" राजकवि ठारणबापू महेडु हस्तप्रत भण्डार(निजी संग्रह), अध्याय २, छंद ११.

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 2
Issue: 6
November-December: 2025

अभ्यास की दृष्टि से अधिक उपयोगी सिद्ध होता है, जबकि *वाणीभूषण* सैद्धान्तिक आधार प्रदान करता है।

इस शोध के निष्कर्षस्वरूप यह कहा जा सकता है कि छन्दशास्त्र की समग्र एवं गहन समझ के लिए किसी एक ग्रन्थ पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है, अपितु विभिन्न आचार्यों के ग्रन्थों का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक है। प्रस्तुत शोध से वर्णवृत्तों की संरचना, गुरु-लघु व्यवस्था तथा चरण-विन्यास के सूक्ष्म पक्ष स्पष्ट हुए हैं। आशा है कि यह अध्ययन छन्दशास्त्र के विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं संस्कृत साहित्य के अध्येताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा तथा भविष्य में वर्णवृत्त पर आधारित आगे के शोध के लिए प्रेरणास्रोत बनेगा।